पाठ 21

आओ फिर से दिया जलाएँ

(प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने जीवन में आने वाली कठिनाइयों से निराश न होने तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहने की प्रेरणा दी है।)

भरी दुपहरी में अँधियारा,

सूरज परछाईं से हारा,

अन्तरतम का नेह निचोडें, बुझी हुई बाती सुलगाएँ।

आओ फिर से दिया जलाएँ।

हम पड़ाव को समझे मंजिल,

लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल,

वर्तमान के मोहजाल में आने वाला कल न भुलाएँ।

आओ फिर से दिया जलाएँ।

आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा,

अपनों के विघ्नों ने घेरा।

अंतिम जय का वज्र बनाने, नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ।

आओ फिर से दिया जलाएँ।

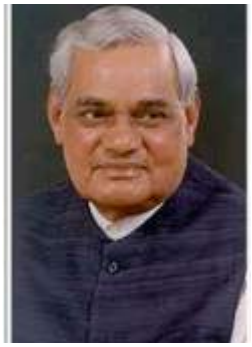

अटल बिहारी बाजपेयी का जन्म 2 दिसम्बर 1924 ई0 को ग्वालियर म0प्र0 में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री कृष्ण बिहारी बाजपेयी एवं माता श्रीमती कृष्णा देवी था। अटल जी भारत के प्रधानमंत्री भी रहे। भारत सरकार द्वारा इनको 'भारतरत्न' प्रदान किया गया है। इनकी प्रमुख रचनाएँ-'मेरी इक्यावन कविताएँ', 'नई चुनौती नया अवसर', 'मेरी संसदीय यात्रा (चार खण्ड)', 'न दैत्यं न पलायनम्' इत्यादि है।

शब्दार्थ

अन्तरतम = अन्तःकरण, सबसे भीतरी भाग। **नेह** = प्रेम। **आहुति** = यज्ञ या हवन के समय सामग्री को अग्नि में डालना। **विघ्न** = बाधा।

1. भरी हुइ दुपहरी से कवि का क्या आशय है ?

2. कवि बुझी हुई बाती को कैसे सुलगाने को कह रहा है ?

3. ‘पड़ाव को ही समझे मंजिल’ का क्या आशय है ?

4. ‘आहुति बाकी यज्ञ अधूरा’ से कवि का क्या आशय है ?

5. ‘वर्तमान के मोह जाल’ से कवि का क्या आशय है ?

6. कवि द्वारा ‘नव दधीचि’ की बात क्यों की जा रही है ?

विचार और कल्पना-

1. अगर भरी हुई दुपहरी में अचानक अँधेरा हो जाय तो क्या-क्या कठिनाइयाँ होंगी ?

2. यदि आने वाले कल को भुला दिया जाय तो हमारे वर्तमान पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा ?

कुछ करने को-

1. दीप से सम्बंधित अन्य कवियों की कविताओं का संग्रह कर पुस्तिका में लिखिए।

2. बिजली का अविष्कार होने के पूर्व प्रकाश के लिए किन-किन साधनों का प्रयोग किया जाता था, पता करके लिखिए।

3. अपने भविष्य को सुधारने के लिए वर्तमान में आप क्या-क्या करेंगे। इस विषय पर पुस्तिका में लिखिए।

भाषा की बात-

1. ‘अं’ को अनुस्वार कहते हैं। इसका चिह्न (ं) होता है। अनुस्वार एक नासिक्य ध्वनि है, क्योंकि इसे बोलते समय हवा केवल नाक से बाहर निकलती है। इसका प्रयोग प्रत्येक

व्यंजन वर्ग के पंचमाक्षर यानी पाँचवंे अक्षर जैसे-ड., ज, ण, न, म के स्थान पर किया जाता है। दिये गये शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार (ं) लगाइए-

यथा- निचोड़े- निचोड़ें

मजिल

अतिम

विघ्नो

2. नेह शब्द का दो अर्थ है-1. प्रेम 2.तेल। इसी प्रकार दो अर्थ देने वाले पाँच शब्द और उनका अर्थ लिखिए।

3. कविता में आए तुकान्त शब्दों को छाँटकर अपनी पुस्तिका पर लिखिए।

शिक्षण संकेत- कविता में आए दधीचि प्रसंग को छात्रों को विस्तार से बताएँ।

पढ़ने के लिए

जलाते चलो ये दीये स्नेह भर-भर

कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा।

जला दीप पहला तुम्ही ने तिमिर की,

चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी।

तिमिर की सरित पार करने तुम्हीं ने,

बना दीप की नाव तैयार की थी।

बहाते चलो नाव वह तुम निरन्तर,

कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा।

जलाते चलो ये दीये स्नेह भर-भर

कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा।

-द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (द्वारिका)

इसे भी जानें

उपरोक्त भारतीय रेल यात्री टिकट के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें-

(क) कहाँ से कहाँ तक यात्रा करने के लिए टिकट क्रय किया गया है ?

(ख) यात्रा में ट्रेन द्वारा कुल कितनी दूरी तय की गयी ?

(ग) किस श्रेणी में यात्रा करने हेतु टिकट क्रय किया गया है ?

(घ) यात्रा करने की तिथि कौन सी है ?

(ड़) यात्री का च्छत् नम्बर क्या है ?

(च) टिकट खरीदने हेतु कुल कितना धन व्यय किया गया है ?

(छ) किस नम्बर की गाड़ी से यात्रा की गयी ?

(ज) कुल कितने यात्रियों के लिए टिकट खरीदा गया है ?

(झ) यात्रियों को किस-किस नम्बर का सीट/बर्थ आवंटित किया गया है ?

अनिवार्य-संस्कृत

वन्दना

(1)

प्रभो! त्वं पिताऽसि, त्वमेवासि माता

वयं बालकाः बालिकास्त्वां नमामः।

त्वमेवासि विश्वस्य कर्ता विधाता

त्वमेवासि बन्धुः, त्वमेवासि भर्ता।।

(2)

प्रभो! देहि विद्यां सुबुद्धिं प्रदेहि

बलं देहि देहे सुकर्माणि कर्तुम्।

प्रभो! देशभक्तिं सुविद्यां च देहि

सदा सद्गुणानेव देव! प्रदेहि।।

(3)

प्रभो! ज्ञानगङ्गा-तरङ्गैः नवीनैः,

समस्तं विभेदं हर त्वं जनानाम्।

सुधासार-सिक्ताः सदा प्रेमयुक्ताः,

वयं शक्तिमन्तः सदा त्वां नमामः।।

शब्दार्थ

प्रभो!=हे स्वामी। **त्वम्**=तुम। **असि**=हो। **वयम्**=हम सभी। **नमामः**=नमस्कार करते हैं। **कर्ता**=करने वाला। **विधाता**=निर्माता। **बन्धुः**=सम्बन्धी। **भर्ता**=पालक। **देहि**=दो। **प्रदेहि**=प्रदान करो। **सुकर्माणि**=अच्छे कार्य। **सद्गुणानेव**=(सद्गुणान्+एव)=अच्छे गुणों को ही। **विभेदम्**=भेद-भाव। हर=दूर करो। **सुधासार**=अमृत-रस से। **सिक्ताः**=भीगे हुए। **शक्तिमन्तः**=शक्तिशाली।

अन्वय-

हे प्रभो ! त्वं पिता असि, त्वमेव माता असि, त्वमेव विश्वस्य कर्ता असि, विधाता (असि), त्वमेव बन्धुः असि, त्वमेव (विश्वस्य) भर्ता असि। (अत एव) वयं बालकाः बालिकाश्च त्वां नमामः ।। 1 ।।

हे प्रभो (अस्मभ्यं) विद्यां देहि, सुबुद्धिं प्रदेहि, सुकर्माणि कर्तुं देहे बलं देहि, देशभक्तिं देहि, सुविद्यां देहि। हे देव ! सदा सद्गुणानेव प्रदेहि ।। 2 ।।

हे प्रभो ! नवीनैः ज्ञानगङ्गातरङ्गैः जनानां समस्तं विभेदं त्वं हर। (येन) सुधासार सिक्ताः सदा प्रेमयुक्ताः शक्तिमन्तः वयं सदा त्वां नमामः ।। 3।।

भावार्थ

तुम हमारे पिता हो, तुम्हीं हमारी माता हो, इस विश्व का निर्माण करने वाले हो, विधाता तुम्हीं हो, तुम ही हमारे बन्धु हो तथा तुम्हीं हमारे पालन-पोषण करने वाले हो, हे प्रभु ! हम सब बालक-बालिकाएँ तुम्हें नमस्कार करते हैं। ।। 1 ।।

हे प्रभु ! (हमें) विद्या और सुबुद्धि प्रदान करो, अच्छे कार्यों को करने के लिए हमारे शरीर में बल प्रदान करो, हे प्रभु ! हमें देशभक्ति का भाव तथा सुविद्या प्रदान करो। हे देव ! हमेशा हम में सद्गुणों का ही विकास करो। ।। 2 ।।

हे प्रभु ! अपने ज्ञान-गंगा के नवीन तरंगों से मनुष्यों के समस्त भेद-भाव को हर लो। हम सब में अमृत रस एवं प्रेम-भाव का संचार करने वाले, शक्ति प्रदान करने वाले प्रभु ! तुम्हें हम सब प्रणाम करते हैं। ।। 3 ।।

शिक्षण-संकेत -

श्लोकों का सस्वर गायन कराएँ।